an>

Title: Regarding situation being faced by Urdu newspapers due to the negligent attitude of Government Institutions in the country.

**अध्यक्ष महोदया :** कौशलेन्द्र कुमार जी, मुलायम सिंह जी को बोलने दीजिए।

**श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी):** महोदया, यह सवाल बहुत महत्वपूर्ण है। अगर हमें बोलना नहीं होता तो इतनी मेहनत करके सवाल क्यों उठाते? उर्दू भाषा हिन्दुस्तानी भाषा है और पूरे समाज की भाषा है। उर्दू समाचार पत्रों के विज्ञापन पर प्रतिबंध लगाना, प्रचार प्रसार रोकना, उर्दू भाषा को खत्म करना है। अगर किसी कौम को खत्म करना हो तो उसकी जुबान, भाषा को खत्म किया जाता है। आज भी पांच करोड़ से ज्यादा लोग उर्दू भाषा में पढ़ते, लिखते हैं और नौकरियों के लिए इम्तिहान देते हैं। उत्तर प्रदेश में भर्ती हुई तो पांच फीसदी ऐसे लोग थे जिन्होंने उर्दू भाषा में लिखा था। लेकिन आज उर्दू भाषा को यह कह कर मिटाया जा रहा है कि उर्दू एक समाज की भाषा है। यह थोपा जा रहा है कि मुसलमानों की भाषा है। यह मुसलमानों की भाषा नहीं हिन्दुस्तान की भाषा है। इस देश में राजकाज भी उर्दू में हो चुका है। आज उर्दू की दयनीय दशा हो गई है जबकि यह सबसे मीठी और लोकप्रिय भाषा है। इस भाषा को मिटाने के लिए सरकार इस षडयंत्र में लगी है, मैं यह इसलिए कह सकता हूं क्योंकि सरकार इस तरफ ध्यान नहीं दे रही है। आजादी की लड़ाई में उर्दू भाषी शायरों और नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उर्दू और हिंदी, दोनों भाषाओं ने मिलकर आजादी की लड़ाई लड़ी थी। उर्दू भाषा ने कुरबानी देने के लिए बहुत जोश पैदा किया था जबकि आज उस भाषा को मिटाने की बात हो रही है। मेरा आग्रह है कि सरकारी नौकरियों में 14.6 प्रतिशत मुसलमानों की भर्ती की जाए। हमने करके दिखाया है और यह भर्ती हुई है। उत्तर प्रदेश में 15 फीसदी उर्दू पढ़ने लिखने वालों की भर्ती हुई है, आप जांच करा सकते हैं। आज उर्दू अखबारों को समाप्त किया जा रहा है, मैं इसे भाषा मिटाने का षडयंत्र ही कह सकता हूं। उर्दू अध्यापकों की बहुत पोस्टिंग की हुई, यह हजारों में है। उर्दू भाषा के बारे में यह कहना कि यह मुसलमानों की भाषा है, यह थोपना गलत है। यह मुसलमानों की भाषा नहीं है हिन्दुस्तान की भाषा है। ऐसे कुछ लोग हैं जो इसे खत्म करना चाहते हैं। माननीय सदस्य यहां बैठे हैं, ये जिस कौम में हैं, इनकी कौम में सबसे ज्यादा उर्दू बोली जाती थी और आज भी लोग लिखते पढ़ते हैं। क्या ये मुसलमान हैं? यह बहुत ही बुद्धिजीवी, साहित्यकारों का समाज है। यह बहुत आगे रहा है। उर्दू भाषा का स्वतंत्रता की लड़ाई में बहुत योगदान रहा है लेकिन आज पत्रकारिता खत्म हो रही है।

आज अखबार बंद हो गये, विज्ञापन बंद हो गये। आखिर विज्ञापन बंद क्यों किये गये हैं? हम आपके सामने यह बात रखना चाहते हैं कि एक बार केन्द्र सरकार ने गुजराल समिति की रिपोर्ट इसी सदन में पास कराई थी कि उर्दू भाषा का विकास किया जायेगा। इसी सदन के द्वारा एक कमेटी बैठी थी, जिसकी अध्यक्षता भूतपूर्व प्रधान मंत्री, श्री इंद्र कुमार गुजराल ने की थी। उस समय भी पूरे देश में उर्दू भाषा को महत्व दिया गया था। यह भाषा आज की नहीं, 18 जनवरी, 1968 में भी दोनों सदनों द्वारा सरकारी प्रस्ताव पारित किये गये थे और इस बात पर जोर दिया गया था कि शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विकास के दृष्टिगत हिन्दी के अतिरिक्त 14 भारतीय भाषाओं का भी विकास होना चाहिए, तमिल और तेलुगु भाषा का भी विकास होना चाहिए। हमारे हिंदुस्तान जो 14 भाषाएं हैं, उसमें उर्दू बहुत महत्वपूर्ण भाषा है।

**अध्यक्ष महोदया :** मुलायम सिंह जी, अब समाप्त कीजिए।

**श्री मुलायम सिंह यादव :** अध्यक्ष महोदया, मैं दो मिनट में समाप्त कर दूंगा। 2 मई, 1972 को संसद के समक्ष प्रो. नूरुल हसन द्वारा यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था और उसके बाद उर्दू को एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय भाषा माना गया था। यदि आप उस समय के आंकड़े देखें तो आप देखेंगे कि हिंदुस्तान में 51, 536,111 लोगों की मातृभाषा उर्दू है। गुजराल कमेटी की रिपोर्ट 8 मई, 1975 को शिक्षा मंत्रालय को प्राप्त हुई थी। हम जानना चाहते हैं कि उस पर सरकार ने क्या किया है और आगे सरकार क्या करना चाहती है? 1979 की रिपोर्ट पर तरक्की उर्दू बोर्ड की एक उपसमिति द्वारा भी विचार किया गया था।

**अध्यक्ष महोदया :** मुलायम सिंह जी, आप उतना लम्बा मत पढ़िये। अब आप समाप्त कीजिए।

**श्री मुलायम सिंह यादव :** मैं दो मिनट में समाप्त कर दूंगा। मैं बोलना तो बहुत चाहता हूं। परंतु मैं चाहता हूं कि इस पर चर्चा करा दी जाए और सदन की राय भी ले ली जाए। मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं, मैंने इस बारे में पहले ही कहा कि आजादी की लड़ाई में उर्दू की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसमें देहली उर्दू अखबार के सम्पादक मौलवी मुहम्मद बाकर को भी यह सम्मान प्राप्त हुआ था और 1857 में सादिकुल अखबार के सम्पादक जमालुद्दीन को विद्रोहियों की सहायता के आरोप में तीन वर्ष का कारावास दिया गया था। यह अंग्रेज हुकूमत ने किया था, क्योंकि उन्होंने आजादी की लड़ाई में इस भाषा का प्रयोग किया था।

अध्यक्ष महोदया, मैं आज कहना चाहता हूं कि मुस्लिम लीग, आर्य समाज, हिन्दू महासभा, खिलाफत कमेटी और अलीगढ़ आंदोलन उर्दू समाचार पत्रों के समाचारों में अहम् स्थान रखते रहे। केवल यही नहीं आर्थिक संसाधनों के अभाव में एवं अन्य विभिन्न कारणों से अधिकांश उर्दू समाचार पत्र आर्थिक रुप से जर्जर हो चुके हैं और इस सरकार ने उर्दू समाचार पत्रों को विज्ञापन देना बंद कर दिया है। एक भाषा को खत्म करना किसी कौम को खत्म करना है। यदि एक कौम को खत्म करना है तो उसकी भाषा को खत्म कर दीजिए। क्या सरकार का यही कर्तव्य है? आप सरकार से जवाब मांगिये कि उर्दू भाषा के अखबारों के विज्ञापन क्यों बंद किये गये हैं? इसके अलावा कारपोरेट जगत एवं हिंदुस्तान के बड़े-बड़े उद्योगपति एवं पूंजीपति भी पूरी तरह से उर्दू समाचार पत्रों की उपेक्षा कर रहे हैं। इसलिए आज एक बड़ा खतरा उर्दू भाषा को खत्म करने का खतरा पैदा हो गया है।

**अध्यक्ष महोदया :** मुलायम सिंह जी, अब आप समाप्त कीजिए।

**श्री मुलायम सिंह यादव :** उर्दू भाषा के प्रति सरकार का उपेक्षापूर्ण रवैया है। जबकि इस देश में उर्दू पाठक भी करदाता है। ये लोग भी कर देते हैं। उर्दू अखबार वाले भी उर्दू की अपनी सेवाओं के लिए देश को कर देते हैं। ...(व्यवधान) उर्दू देश की सबसे अधिक लोकप्रिय और सबसे मीठी भाषा मानी जाती है।

**अध्यक्ष महोदया :** जो माननीय सदस्य इससे अपने सम्बद्ध करना चाहते हैं, वे अपने नाम भेज दें।

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** श्री लालू प्रसाद,

श्री रामकिशुन,

श्री राकेश सचान,

श्री धर्मेन्द्र यादव,

श्री नामा नागेश्वर राव,

श्री अब्दुल रहमान,

श्री शैलेन्द्र कुमार तथा

श्री एम.बी.राजेश इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करते हैं।

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** नारायणसामी जी, आप बोलिये।

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** आप इन्हें बोलने दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** जीरो ऑवर के लिए सब लोग इंतजार कर रहे हैं, उनका क्या होगा। आप इस तरह मत कीजिए। दो-तीन दिन से जीरो ऑवर नहीं हुआ है। All these people who have given notice for 'Zero Hour', we have to also see them. Is it not? नारायणसामी जी, आप बोलिये।

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** आप इस तरह से मत कीजिए। जीरो ऑवर चलने दीजिए। यादव जी ने स्पेशल परमीशन ली थी, हमने उन्हें दे दी। अब आप सब लोग बोल रहे हैं।

â€¦(व्यवधान)

**13.00 hrs.**

**अध्यक्ष महोदया :** ज़ीरो ऑवर चलने दीजिये। इन्होंने स्पेशल परमिशन लिया था तो उनको दे दिया। अब आप सब लोग बोलेंगे तो अच्छा नहीं है।

...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: All these people who have given notice for 'zero hour' also have to speak.

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** ज़ीरो ऑवर चलने दीजिये. श्री नारायणसामी जी, आप बोलिये।

...(व्यवधान)

**योजना मंत्रालय में राज्य मंत्री और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री वी.नारायणसामी):** मैं रैस्पौंड कर रहा हूं, मैं आपके फेवर में बात कर रहा हूं।...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** ज़ीरो ऑवर चलने दीजिये। आप लोग एसोसिएट करना चाहते हैं?

â€¦(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Please do not make it long. I have to run the House. I have to give chance to the 'zero hour' people. मुलायम सिंह जी भी बहुत देर बोले हैं।

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** ज़ीरो ऑवर लेने दीजिये।

**श्री सुदीप बंदोपाध्याय (कोलकाता उत्तर):** मैडम स्पीकर, उर्दू जुबान एक मीठी जबान होती है। मुलायम सिंह जी ने जो मामला यहां रखा है, मैं उनको अपना पूरा समर्थन देता हूं। हम चाहते हैं कि सारे देश...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Then you go on and you make it so long and everybody else waits.

**श्री सुदीप बंदोपाध्याय :** उर्दू जुबान को अपना स्टेटस देना चाहिये। अगर उर्दू जुबान को कोई प्रोटैक्शन नहीं देंगे तो हम लोग उसके खिलाफ जरूर लड़ेंगे। ...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** श्री नारायणसामी जी की बात रिकॉर्ड में जायेगी।

SHRI V. NARAYANASAMY : Madam, senior leader of the House hon. Mulayam Singh Yadavji has raised a very important issue. Urdu is a very important language of our country. ...(*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: Hon. Members, all those who want to associate themselves with this very important issue, namely importance of the Urdu language, please send your names to the Table. Let the hon. Minister respond now because the 'zero hour' people are waiting.

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** मुलायम सिंह जी, इस तरह नाराज होने से तो नहीं चलेगा कि आप नाराज़ हो जायें। आप बैठ जाइये। माननीय मंत्री जी जवाब दे रहे हैं।

...(व्यवधान)

**श्री गोपीनाथ मुंडे (बीड):** अध्यक्ष महोदया, मैं अपनी बात कहना चाहूंगा।

**अध्यक्ष महोदया :** ठीक है, आप एक वाक्य में खत्म कीजिये।

**श्री गोपीनाथ मुंडे :** अध्यक्ष महोदया, श्री मुलायम सिंह जी ने उर्दू भाषा के लिये जो कहा, उर्दू भाषा देश की भाषा है, किसी धर्म की भाषा नहीं है। इसलिये, उर्दू भाषा के महत्व को समझना चाहिये, उसे महत्व देना चाहिये। उर्दू लैंग्वेज़ के एडवरटाइजमेंट बंद करना गलत है। हर भाषा इतनी अच्छी भाषा है, उस पर अन्याय हो रहा है, वह अन्याय दूर करना चाहिये।

**श्री दारा सिंह चौहान (घोसी):** अध्यक्ष महोदया, यह सही है कि उर्दू जुबान बहुत ही मीठी जुबान है, इस से इनकार नहीं किया जा सकता है। हम लोग जानते हैं कि पुराने जमाने में खतो-किताबत उर्दू जुबान में ही लिखे जाते थे. इसलिये इस मामले पर चर्चा होनी चाहिये। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि आज उत्तर प्रदेश सरकार को उर्दू के विकास के लिये पूरा समर्थन दिया जाना चाहिये।...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** लालू जी, आप बैठ जाइये. श्री महबूब बेग को बोलने दीजिये। लालू जी वौल्यूम ऊंचा न करिये। आप बहुत ऊंचा स्वर क्यों ले जा रहे हैं? आप पहले बेग जी को बोल लेने दीजिये। आप बैठिये।

**डॉ. मिर्ज़ा महबूब बेग(अनंतनाग):** मैडम स्पीकर, मैं अपने अपने आपको इनकी फीलिंग्स के साथ एसोसिएट करना चाहता हूं...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** यह क्या हो रहा है? इतनी मीठी जुबान में बात करते समय शोर नहीं मताइये। आप बातों में मिठास लाइये। बेग जी बोलिये।

**डॉ. मिर्ज़ा महबूब बेग:** मैडम, मैं हाऊस की फीलिंग्स देखकर अपने आपको एसोसिएट करता हूं। हम बहुत एनकरेज फील कर रहे हैं मगर जबानी जमा-खर्च से कुछ नहीं होगा।

काइन्डली इसकी तरफ तव्वजो दी जाये। यह भाषा हमारी तहजीब, हमारी तमद्दुन से जुड़ी हुई है। हमारी जड़ें इस जुबान के साथ जुड़ी हुई हैं। मैं आपसे गुजारिश करूंगा कि उर्दू के साथ इंसाफ किया जाय। पूरा हाऊस कह रहा है कि उर्दू के साथ इंसाफ करें। मगर प्रैक्टिकली यह हो रहा है कि उर्दू भाषा में जो न्यूजपेपर शाया होते हैं, उन्हें एडवरटीजमेंट्स नहीं मिलते हैं, उन्हें कोई एनकरेजमेंट नहीं मिलता है।

महोदया, इसके लिए आपकी तरफ से डायरेक्शन आना चाहिए। यह सारे हाउस का कंसर्न है कि इस जुबान के साथ नाइंसाफी हुई है, इम्तियाज हुआ है, इसे हमारी तहजीब और हमारी तमद्दुन के साथ जुड़ी हुई जुबान समझा जाये और इसकी फरोग़ के लिए आज से ही तमाम इक्दामात उठाये जायें, जिससे इस हिन्दुस्तान की जुबान को एक ऐसा वकार मिले, जिसकी यह पूरी हकदार है। धन्यवाद।

**नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री (डॉ. फ़ारूख़ अब्दुल्ला):** महोदया, मैं उर्दू में बोलूगा।

**अध्यक्ष महोदया :** आप उर्दू में ही बोलिये।

**डॉ. फ़ारूख अब्दुल्ला :** महोदया, मैं खासकर शत्रुघ्न सिन्हा साहब से कहना चाहता हूं क्योंकि ये फिल्मी दुनिया को रिप्रजेंट करते हैं। उर्दू को अगर किसी ने जिन्दा रखा है तो वह हिन्दुस्तान की फिल्म इंडस्ट्री है। मैं आज सारे सदन में यह कहना चाहता हूं कि अगर आप लोग नहीं होते तो उर्दू कब की मर गयी होती। मैं तहे-दिल से आपकी सारी इंडस्ट्री का शुक्रिया अदा करता हूं और उम्मीद करता हूं कि हिन्दुस्तान में उर्दू उसी तरह चमकेगी जिस तरक बाकी जुबानें चमक रही हैं। ऐसा होगा और इसमें कोई भेदभाव नहीं होगा। मैं वित्त मंत्री जी से भी गुजारिश करूंगा कि हिन्दुस्तान की केंद्र सरकार को ज्यादा से ज्यादा एडवरटीजमेंट उर्दू के अखबारों को देने चाहिए, जिससे ये अखबार जिन्दा रह सकें नहीं तो ये मर जायेंगे।...(व्यवधान)

**स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री गुलाम नबी आज़ाद):** महोदया, यह पहला मौका है जब हाउस के सभी साइड्स और विशेष रूप से बीजेपी के डिप्टी लीडर ने भी उर्दू के लिए अपना समर्थन दिया है।...(व्यवधान)

**श्री गणेश सिंह (सतना):** हमने कभी विरोध नहीं किया है।...(व्यवधान)

**श्री गुलाम नबी आज़ाद :** मैं आपकी तारीफ ही कर रहा हूं, गाली नहीं दे रहा हूं। विशेष रूप से बीजेपी के डिप्टी लीडर ने भी अपना समर्थन उर्दू के लिए दिया, जो बहुत ही खुशी की बात है। अफसोस की बात यह है कि अभी दस-बारह दिन पहले पूरे देश के उर्दू के जो पत्रकार दिल्ली मे हैं, वे मुझसे मिले और उन्होंने कहा कि अगर इस उर्दू जुबान को जिन्दा रखना है तो उर्दू चलाने वाला पत्रकार या एडिटर, एडिटर भी वही होता है, प्रिंटर, पब्लिशर और प्रोपराइटर भी वही होता है और वह गरीब होता है। प्रिंटर, पब्लिशर, प्रोपराइटर और एडिटर एक ही आदमी क्यों होता है? वह इसलिए होता है क्योंकि वह गरीब है। वह इतना पैराफरनेलिया नहीं रखता है। कभी-कभी कॉरेस्पान्डेंट भी खुद ही होता है। ऐसा गरीबी की वजह से होता है। बहुत साल पहले जब 1990 के दशक में हमारी वर्ष 1996 तक सरकार थी तो पूरे देश में उन्हें विज्ञापन मिलते थे, लेकिन बीच में कम हो गये। रीजनल भाषाएं बहुत अच्छी हैं। हमारी रीजनल भाषाएं बहुत सी हैं। मैं बहुत चाहता हूं कि तमिल, तेलुगू, मलयालम, मराठी, गुजराती, सभी रीजनल भाषाएं फले-फूलें।...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** आप शांत होकर सुनिये।

**श्री गुलाम नबी आज़ाद :** जिन राज्यों में रीजनल भाषाएं हैं, उनके 90 प्रतिशत विज्ञापन उन भाषाओं में ही दिये जाते हैं, लेकिन उर्दू की कोई पर्टिकुलर स्टेट नहीं है। इसलिए उसे विज्ञापन कहां से मिलेंगे? उर्दू पूरे हिन्दुस्तान की भाषा है। आप बंगाल में देखिये, नम्बर वन ए क्लास के अखबार कोलकाता से निकलते हैं। ये आज से नहीं, आजादी के समय से निकलते हैं और ये आजादी की जद्दोजहद में शामिल थे। हैदराबाद साउथ में है और सबसे बड़े पेपर वहां से निकलते हैं, बैंगलुरू साउथ में है, वहां से उर्दू के पेपर निकलते हैं, मुम्बई से उर्दू के पेपर निकलते हैं, पटना से उर्दू के पेपर निकलते हैं, लखनऊ से उर्दू के पेपर निकलते हैं, चेन्नई से निकलते हैं। चार साउथ इंडियन स्टेट्स है, उन सभी राज्यों से उर्दू के पेपर निकलते हैं, ईस्ट के स्टेट्स से उर्दू के पेपर निकलते हैं।

पंजाब केसरी तो 20 साल पुराना है, लेकिन हिंद समाचार जो कि उर्दू का सबसे बड़ा पेपर है, उसका असली वर्ज़न आजादी से पहले का है। यह दिल्ली से पेपर निकलता था...(व्यवधान)

**श्री हुकमदेव नारायण यादव (मधुबनी):** सरकार आपकी है तो आप कर लीजिए। आप हमें क्यों सुना रहे हैं?...(व्यवधान)

**श्री गुलाम नबी आज़ाद :** इसमें सरकारों को ही देना ही होगा।...(व्यवधान)

**श्री हुकमदेव नारायण यादव:** आपकी सरकार है। आप उनको कहिए...(व्यवधान)

**श्री गुलाम नबी आज़ाद :** मैंने कल इस बात को कहा था। आप मेरे जवाब के समय मौजूद नहीं थे। कल वित्त मंत्री जी और मैंने जवाब दिया कि किसी भी पॉलिसी को इम्पलीमेंट केवल केन्द्रीय सरकार नहीं कर सकती है।...(व्यवधान) अब 70 का दशक नहीं है, जब केन्द्र और राज्यों में एक पार्टी की हुकूमत होती थी। आज सभी पार्टियां विपक्ष में हैं और सभी पार्टियां सत्ता में हैं, क्योंकि किसी राज्य में एक पार्टी सत्ता में है तो दूसरे राज्य में विपक्ष में है। इसलिए उर्दू को केवल केन्द्रीय सरकार के स्तर पर ही नहीं बल्कि सभी राज्य सरकारों को अपने-अपने राज्यों में इसकी सहायता करनी होगी।...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** यदि आप बहस करना मुनासिब समझते हैं तो नोटिस भेज दीजिए। इस पर पूरी बहस हो जाएगी। अभी हम शत्रुघ्न सिन्हा जी को फ्लोर देते हैं।...(व्यवधान)

**श्री मुलायम सिंह यादव :** हम चाहते हैं कि आप इस पर चर्चा स्वीकार करें।...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** आप बोल चुके हैं। अब आप इनको बोलने दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

**श्री शत्रुघ्न सिन्हा (पटना साहिब):** अध्यक्ष महोदया, सबसे पहली बात यह है कि मैं आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। आदरणीय मुलायम सिंह यादव जी ने बहुत बढ़िया विषय उठाया और दुखती रग पर हाथ रख दिया है। आज उर्दू के साथ जो हो रहा है, जैसा गोपीनाथ मुडे जी कह रहे थे, उर्दू हमारी भाषा है, यह किसी धर्म विशेष की भाषा नहीं है। उर्दू हर धर्म की भाषा है, उर्दू मानवता की भाषा है, उर्दू प्रोग्रेस की भाषा है और उर्दू हिन्दुस्तान की भाषा है। अभी फिराक गोरखपुरी का जिक्र किया गया। फिराक गोरखपुरी ने अपनी पूरी जिन्दगी उर्दू की खिदमत में लगा दी। मेरा ख्याल है कि भारतवर्ष में गालिब के बाद उर्दू में सबसे ज्यादा किसी का नाम है, तो वह फिराक गोरखपुरी साहब का है। अभी जैसा कि हमारे भाई फारूख अब्दुल्ला साहब ने कहा कि फिल्मों का इसमें बहुत बड़ा योगदान है, यकीनन भाषा के मामले में चाहे हिन्दी हो, चाहे उर्दू हो, दोनों हमारी अपनी भाषाएं हैं, इनके प्रमोशन में, प्रोटैक्शन में, प्रोजेक्शन में अगर सबसे ज्यादा किसी का

हाथ है, तो हमारी भारतीय फिल्मों का है। भारतवर्ष का कोई ऐसा प्रदेश नहीं है और शायद कोई ऐसा नागरिक नहीं है, जो अपने आम जीवन में रोज़ाना उर्दू का प्रयोग नहीं करता हो। आम आदमी तखलिया हो या तनहाई हो, आम आदमी हो या खास आदमी हो, जो भी वह सब उर्दू है। उर्दू-हिन्दी का इतना अच्छा संगम है कि हम गंगा-जमुनी तहजीब की बात कहते हैं। गंगा-जमुना तहजीब की तरह से एक दूसरे में समावेश है। यह हमारी भाषा है, भारतवर्ष की भाषा है। अब इसके लिए आगे सरकार क्या कदम उठा रही है, इसको आगे कैसे और मजबूत करेगी, कैसे इसका और प्रचार-प्रसार हो, कैसे इसको उरूज़ तक लेकर जाएं। सरकार इसके साथ न्याय कर रही है या नहीं कर रही है? हमारे उर्दू के अखबार पूरे देश में निकलते हैं, पटना में हैं, चेन्नई में हैं, महाराष्ट्र में हैं, दुनिया के हर कोने में हैं।...(व्यवधान)

यू.पी., बंगाल, चेन्नई और महाराष्ट्र से लेकर नार्थ इंडिया, नार्थ-ईस्ट, वेस्ट और साऊथ सब जगह है, लेकिन क्या उर्दू के अखबारों को जो समर्थन मिलना चाहिए, वह हमारी और हमारी सरकार की तरफ से मिल रहा है? क्या उर्दू भाषा को स्कूल और कॉलेज में जो एहमियत मिलनी चाहिए, वह वहां मिल रही है और अगर नहीं मिल रही है तो क्यों नहीं मिल रही है, क्योंकि यह हमारी भाषा है, आम आदमी की भाषा है, फिल्मों की भाषा है, आपकी और पूरे पार्लियामेंट की भाषा है, सब की भाषा है। देश में एक भी आदमी ऐसा नहीं होगा, मैं उर्दू की बात कर रहा हूं, जो एक वाक्य भी उर्दू की बैसाखी के बगैर पूरा करता हो, कोई भी वाक्य ऐसा नहीं है, यानी उर्दू बैसाखी भी है, यह हमारा साथ भी देती है, यह हमारे साथ है। उर्दू सदियों से चली आ रही है, मैं समझता हूं कि सरकार को इसके लिए आगे कुछ और ठोस कदम उठाने पड़ेंगे। उन अखबारों की और हौसला अफज़ाही करनी पड़ेगी, उनको बढ़ाना पड़ेगा। उर्दू का प्रचलन स्कूल, कॉलेजेस में तथा हर जगह होना चाहिए। आज हम जैसे संस्कृत और हिन्दी पर जोर दे रहे हैं, उससे ज्यादा नहीं तो उतना ही उर्दू पर भी जोर देना चाहिए। धन्यवाद।...(व्यवधान)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PLANNING AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI V. NARAYANASAMY): Madam, I would like to say one thing.

MADAM SPEAKER: Let these two Members also speak and then you can respond.

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया:** आप बैठ जाइए, आपको हम हमेशा मौका देते हैं।

â€¦(व्यवधान)

**श्री गुरुदास दासगुप्त (घाटल):** अध्यक्ष महोदया, हम यह कहना चाहते हैं कि उर्दू हिन्दुस्तान की मेहनतकश जनता की भाषा है। उर्दू की तरक्की के लिए सरकार की तरफ से कार्यवाही करना जरूरी है।...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया:** आप बैठ जाइए।

**श्री गुरुदास दासगुप्त :** मैडम, हम यह बात बोलना चाहते हैं कि सिर्फ एडवरटाइज़मेंट नहीं, उर्दू की प्रमोशन और तरक्की के लिए हम हिन्दुस्तान में ज्यादा उर्दू अकादमी मांगते हैं।...(व्यवधान)

मैडम, हम चाहते हैं कि उर्दू भाषा की तरक्की के लिए सरकार कार्यवाही करे और हिन्दुस्तान की जनता की तरक्की के लिए उर्दू का इस्तेमाल करने का सुझाव दिया जाए। हिन्दी के साथ उर्दू को भी स्थान दिया जाए, यह मेरी सरकार से अपील है।...(व्यवधान)

**श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा):** अध्यक्ष महोदया, उर्दू एक भारतीय भाषा है और यह सबसे मीठी भाषा है। उर्दू भाषा-भाषी हमारे देश के हर प्रांत में हैं।...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया:** सिर्फ बसुदेव आचार्य जी की बात ही रिकार्ड में जाएगी।

...(व्यवधान) *

**श्री बसुदेव आचार्य:** देश आजाद होने के बाद उर्दू को केन्द्रीय सरकार की तरफ से जितनी सहायता मिलनी चाहिए थी, उतनी नहीं मिली।...(व्यवधान) उर्दू भाषा के विकास और प्रमोशन के लिए उतना समर्थन नहीं मिला।...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Do not start giving a long lecture. You have to just associate yourself with it. Members have given notices to raise matters under 'Zero Hour'.

**एक माननीय सदस्य:** उर्दू का सपोर्ट हिन्दी में हो रहा है, धन्यवाद।...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया:** आप बैठ जाइए।

**श्री बसुदेव आचार्य:** उर्दू भाषा हमारे देश की भाषा है।...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया:** आपने बोल लिया है, अब आप बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

**श्री बसुदेव आचार्य :** इसके विकास के लिए केन्द्र सरकार को और ज्यादा मदद देनी चाहिए।...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया:** ठीक है, धन्यवाद, बहुत शुक्रिया।

â€¦(व्यवधान)

**श्री बसुदेव आचार्य :** हमारे बंगाल में उर्दू अकादमी चालू हुई है, हर राज्य में उर्दू अकादमी चालू होनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदया, उर्दू के साथ कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। हमारी मांग है कि उर्दू के विकास के लिए हर तरह का कदम केन्द्र सरकार को उठाना चाहिए। मैं माननीय मुलायम सिंह जी का आभार व्यक्त करता हूं, जो उन्होंने आज यह महत्वपूर्ण मामला सदन में उठाया है। ...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing would go on record now.

*(Interruptions) â€¦**

**रेल मंत्री (कुमारी ममता बनर्जी):** मैडम स्पीकर, मैं आपकी आभारी हूं कि आपने मुझे इस मौके पर बोलने का अवसर दिया। मैं, जनता की मदद, इशारे, मेहरबानी, दुआ और कामयाबी से इस हाउस की बहुत समय से मैम्बर हूं। आज उर्दू भाषा के बारे में हाउस में जो चर्चा हो रही है, वह इससे पहले मुझे देखने को नहीं मिली। इसलिए मैं श्री मुलायम सिंह जी और हर मैम्बर को इसके लिए बधाई देना चाहती हूं। Urdu is a sweet language. I love this language.

मैं कहना चाहती हूं कि उर्दू की जो शायरी होती है, वह सबकी जुबान पर होती है। उसका एक-एक शब्द हमारी जुबान से बुलन्द होता है। जैसे हिन्दी हमारे देश की एक महत्वपूर्ण लैंग्वेज है, वैसे ही हर प्रदेश की अपनी लैंग्वेज होती है और विशेष रूप से उर्दू। मैं कहना चाहूंगी कि रोजा का महीना भी आ रहा है। इसलिए उर्दू की तरफ ज्यादा ध्यान देना जरूरी है। मैं कहना चाहूंगी कि-

"खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तदबीर से पहले

खुदा बंदे से खुद पूछे कि बता तेरी रजा क्या है।"

जब हम आज उर्दू लैंग्वेज के बारे में डिसकशन कर रहे हैं, तो दो-तीन बातें बहुत जरूरी हैं। एक तो उर्दू अखबारों को जो एड दिया जाता था, जिसे बन्द कर दिया गया है, उसे चालू किया जाए। इसमें बहुत गरीब आदमी बहुत कम संसाधनों से काम करते हैं। दूसरी बात है कि हमारे देश में मदरसों की बहुत जरूरत है। टीचर्स नहीं मिलते हैं। हमारे देश में कई जगह ऐसी हैं जहां 10 परसेंट लोग उर्दू स्पीकिंग हैं। हमारे कोलकाता में तो बहुत हैं। जैसे आसनसोल, दुर्गापुर, बानपुर, हावड़ा, बैरकपुर और इस्लामपुर एरिया जैसे बहुत एरियाज हैं, जहां उर्दू ज्यादा बोली जाती है। वहां हमारी बंगाली लैंग्वेज से भी ज्यादा उर्दू जुबान बोलते हैं, लेकिन स्कूलों में उर्दू पढ़ने के लिए कोई लैंग्वेज एक्सैप्टेड नहीं है। इसलिए जहां 10 परसेंट लोग उर्दू पढ़ते हैं और बोलते हैं, वहां उर्दू लैंग्वेज को स्कूलों एवं यूनिवर्सिटीज में कम्पलसरी करना जरूरी है। मैं चाहती हूं कि उर्दू यूनीवर्सिटीज भी हों। उनमें उर्दू स्टूडेंट्स को ज्यादा स्पोंसरशिप देनी चाहिए।

उर्दू को प्रोटैक्शन देने के लिए सेंट्रल गवर्नमेंट को सरकारी मदद देने की बहुत जरूरत है, फिर चाहे वह बिहार, उत्तर प्रदेश, गुजरात, मराठवाड़ा, तामिलनाडु, बंगाल हो अथवा कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हमारे देश का कोई भी क्षेत्र हो, सभी क्षेत्रों में उर्दू लैंग्वेज बोलने वालों की संख्या ज्यादा है। हमारे देश में उर्दू भाषा बोलने वाले बहुत सारे आदमी हैं। हमारी स्टेट में 30 परसेंट के करीब लोग उर्दू बोलते हैं जिसमें मायनारिटी कम्युनिटी भी शामिल है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश और बिहार में 11 परसेंट है।

**श्री दारा सिंह चौहान :** महोदया, उत्तर प्रदेश में उर्दू यूनीवर्सिटीज बनाई गई हैं। इसलिए जैसा उत्तर प्रदेश में किया गया है, वैसा ही उर्दू की बेहतरी के लिए सब प्रदेशों में किया जाना चाहिए।

**कुमारी ममता बनर्जी :** बहुत अच्छा है। यदि किसी प्रदेश ने ऐसा किया है, तो ठीक है। मैडम, मैं कहना चाहती हूं कि जिस प्रदेश ने उर्दू के लिए काम नहीं किया है, वहां यह करना जरूरी है। उर्दू लैंग्वेज को बढ़ावा देने, प्रोटैक्शन देने और कम्पलसरी करने के लिए एक कॉप्रीहेंसिव प्लान बनाना जरूरी है, जिससे मायनॉरिटीज को भी लगे कि उनकी भाषा भी बढ़ रही है।

मैडम, जब मैं रेल मंत्री बनी, तो एक छोटा सा मौका मेरे सामने आया। उसी समय मैंने रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड की परीक्षाएं देने के लिए अंग्रेजी और हिन्दी के साथ-साथ उर्दू लैंग्वेज को भी कम्पलसरी कर दिया और उसमें ऑल रीजनल लैंग्वेज को भी जोड़ दिया। इस प्रकार से उर्दू को प्रोटैक्शन देकर आगे बढ़ाने की जरूरत है।

मैडम, इसके अलावा एक बात और है। मायनॉरिटीज की पॉपुलेशन इन्क्रीज हो रही है। जैसे शेडयूल्ड कास्ट्स एंड शेडयूल्ड ट्राइब्स तथा ओ.बी.सी. की इन्क्रीज हुई पॉपुलेशन के अनुसार रिजर्वेशन की व्यवस्था की जाती है, वैसे ही मायनॉरिटीज की बढ़ी हुई पॉपुलेशन के अनुसार रिजर्वेशन की व्यवस्था की जाए। इसके साथ ही, अन्त में, मैं कहना चाहती हूं कि इस विषय पर आज हम लोगों को डिसकशन का मौका मिला है, यह बहुत अच्छा डिसीजन है।

It is a very good decision. हम कहना चाहते हैं कि उर्दू को ज्यादा प्रोटेक्शन देने की जरूरत है।

मैं एक बात और कहना चाहूंगी कि आजादी की लड़ाई हम लोगों ने नहीं लड़ी है, लेकिन जो हमारी परंपरा है, उसके लिए उन्होंने लड़ा है - चाहे गांधी जी हों, चाहे नेता जी हों, चाहे अबुल कलाम आजाद हों, चाहे अंबेडकर हों, चाहे लाल-बाल-पाल हों, चाहे राजेन्द्र प्रसाद हों, चाहे हमारे देश के कोई भी लीडर हों, लेकिन बात यह है कि अब्दुल खान गफ्फार की लड़ाई को हम लोग याद नहीं करते हैं। जब हमारे देश में वर्ष 1857 में सिपाही युद्ध हुआ था, तब झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, टीपू सुल्तान ने जाकर बहादुर शाह जफर को कहा कि आप आइए और देश की आजादी की लड़ाई में साथ दीजिए। बहादुर शाह जफर ने उनके साथ ज्वाइन किया था। लेकिन बाद में इंडियन्स ने उसके दो लड़कों का मर्डर किया था। बहादुर खान जफर के देहांत होने के बाद उन्होंने एक शायरी लिखी थी कि

"कितना है बदनसीब जफर दफन के लिए, दो गज जमीन भी न मिल सकी कूंचा-ए-यार में।"

यह हमको याद करना चाहिए। मैं कहना चाहूंगी कि

"मुहई लाख बुरा चाहे, तो क्या होता है, वही होता है जो मंजूर-ए-खुदा होता है।"

उर्दू लैंग्वेज को हम लोग पसंद करते हैं, इसीलिए कहना चाहती हूं कि इसको खत्म मत करिए। इसको प्रोटेक्शन दीजिए। यह बात फिल्म में भी है। जनता का भी यही कहना है।

अंत में कहना चाहूंगी कि

"सरफरोशी की तमन्ना आज हमारे दिल में, देखते हैं जोर कितना बाजू-ए- कातिल में है"

With these words, I thank you very much for giving me this opportunity.

**श्री हुक्मदेव नारायण यादव :** बिहार में भी चुनाव होने हैं। ...(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** आप बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** अब मुझे बोल लेने दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** अब हम खड़े हो गए है। जब स्पीकर खड़े हो जाएं, तो आप बैठ जाएं, ऐसा डेकोरम भी हैं।

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** आप बैठ जाइए। आप इसे जानते हैं।

â€¦(व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदया :** इस समय सभी मैम्बरान ने उर्दू जुबान की जो हालत है, उर्दू अखबारनवीसों की जो हालत है, उसे लेकर अपनी फिक्र जाहिर की है, इसलिए मैं चाहती हूं कि सरकार इस ओर पूरी तरह से तवज्जो दे।

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI PRANAB MUKHERJEE): Madam Speaker, I entirely agree with the sentiments expressed by the hon. Members including some of my distinguished colleagues in the Cabinet. There are no two opinions...(*Interruptions*) मुझे माफ कीजिए। I would have loved to speak in Urdu, but...(*Interruptions*)

**श्री शत्रुघ्न सिन्हा :** आपने माफ शब्द बोला, यह भी उर्दू ही है। ...(व्यवधान)

SHRI PRANAB MUKHERJEE : Therefore, I do agree that we are a part of a rich heritage of which Urdu is an integral part. Therefore, I can assure you that the Government will take steps to strengthen this language which is a part of a great national heritage. Already the hon. Prime Minister has instructed the Ministry of Information and Broadcasting to ensure that the Urdu newspapers and other media get due share in their Government funded advertisements of all departments and Ministries which are being routed through the DAVP. Normally the House is divided on issues, but this is one occasion when the entire House was totally united and expressed its solidarity with it. Therefore, keeping that in view, I can assure you Madam and through you to the House that all proper steps will be taken.

**13.29 hrs**

## The Lok Sabha then adjourned for Lunch till Thirty Minutes

*past Fourteen of the Clock.*

**14.30 hrs.**

## The Lok Sabha reassembled after lunch at

*Thirty Minutes past Fourteen of the Clock*

(Mr. Deputy Speaker *in the Chair)*

â€¦(व्यवधान)

**श्री गणेश सिंह (सतना):** उपाध्यक्ष महोदय, हमारा एक निवेदन सुन लीजिए। हम जीरो आवर का नोटिस देते हैं। वह बड़ी मुश्किल से लाटरी में आता है, लेकिन फिर भी यहां बोलने का अवसर नहीं मिलता। यह सभी सदस्यों की शिकायत है। आप कोई समय निर्धारित कर दीजिए जब सदस्य अपनी बात कह सकें। सभी दलों के बड़े नेता किसी न किसी विषय पर रोज बोल लेते हैं, लेकिन जो नए सदस्य आए हैं और नोटिस देते हैं, उनके लिए भी कोई न कोई व्यवस्था होनी चाहिए। बड़ी मुश्किल से बैलेट में नाम आता है।...(व्यवधान)

**उपाध्यक्ष महोदय :** आपको छ: बजे बोलने का समय दिया जाएगा।

â€¦(व्यवधान)

**श्री हुकमदेव नारायण यादव :** छ: बजे बहस चलती रहती है।...(व्यवधान)

**उपाध्यक्ष महोदय :** आज नहीं चलेगी।

â€¦(व्यवधान)

**श्री हुकमदेव नारायण यादव :** छ: बजे बहस चलती रहती है और सरकार की तरफ से यह कहा जाता है कि काम पूरा करने दीजिए, उसके बाद जीरो आवर लेंगे।...(व्यवधान)

**उपाध्यक्ष महोदय :** बाकी काम रोककर छ: बजे जीरो आवर ले लिया जाएगा।

â€¦(व्यवधान)

**श्री हुकमदेव नारायण यादव :** हमारी प्रार्थना है कि जीरो आवर का एक समय तय कर दीजिए। उस समय सदन की सब कार्यवाही रोककर जीरो आवर ले लिया जाए और उसके बाद दूसरी कार्यवाही ली जाए।...(व्यवधान)

**उपाध्यक्ष महोदय :**छ: बजे के बाद जीरो आवर हो जाएगा।

â€¦(व्यवधान)

**श्री हुकमदेव नारायण यादव :** अगर आज छ: बजे जीरो आवर नहीं लिया जाएगा तो सदन का काम नहीं चलने देंगे। ...(व्यवधान)

**योजना मंत्रालय में राज्य मंत्री और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री वी.नारायणसामी):** मैं आपको आश्वासन दे रहा हूं कि छ: बजे जीरो आवर लेंगे।...(व्यवधान)

**श्री हुकमदेव नारायण यादव :** श्रीमान्, मोस्ट इम्पार्टेंट पांच जीरो आवर को स्पीकर साहब पहले ले लेते थे और शेष बाद में लेते थे। तीन दिनों से वह भी बंद है और तीन दिनों से कोई जीरो आवर नहीं लिया जा रहा है। हम साढ़े आठ बजे बिना नाश्ता-पानी किए भाग-भागकर आते हैं। हमें क्यों दौड़ाया जाता है।...(व्यवधान)

**उपाध्यक्ष महोदय :** छ: बजे बाकी काम बंद करके जीरो आवर लिया जाएगा।

â€¦(व्यवधान)

**श्री हुकमदेव नारायण यादव :** हमारे लिए सरकार के बिजनस से ज्यादा जीरो आवर महत्वपूर्ण है।...(व्यवधान) हम अपने क्षेत्र की महत्वपूर्ण जन-समस्या को उठाते हैं। हमारे क्षेत्र के लोग आंख लगाकर देखते रहते हैं।...(व्यवधान)

–

–